AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी की संस्कृत साहित्य में चिंतनशील विचार, सृजनशील लेखन एवं साहित्यिक योगदान का अवलोकन

सुष्मिता सिंह[1] और डॉ. शिवाकांत पाण्डेय[2]

www.https://doi.org/10.5281/zenodo.17595471

Review: 05/10/2025, Acceptance: 25/10/2025 Published:13/11/2025

प्रस्तावना-: भारत का वैदिक कालीन इतिहास संस्कृत साहित्य से प्रारंभ हुआ और आज तक भारतवासियों के अन्तर्मन में समाया हुआ है। संस्कृत के श्लोकों में जो स्वर, उतार चढ़ाव आरोह अवरोह गति यति लय ताल आदि हमारे दिल दिमाग को उर्जावान बनाता है वह शायद कोई और दूसरी भाषा में नहीं है। इसी क्रम में भारतीय इतिहास में सैकड़ो साहित्यकार, कहानीकार, रचनाकार, उपन्यासकार, नाटक, कविता आदि साहित्यिक विधाओं में विद्वानों ने अपना योगदान किया है। भारत की आदि भाषा संस्कृत का साहित्य से ही आज हिन्दी का उद्भव एवं विकास विश्व जगत में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वानों पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी जी का जन्म मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के समीप स्थित सीहोर जिला में हुआ। वह अपने व्यावसायिक एवं साहित्यिक जीवन का अधिकांश समय वाराणसी के काशी हिंदू विश्वविद्यालय में बिताया और संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके द्वारा संस्कृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उत्थान के कारण इन्हें "सनातन कवि" उपनाम से संबोधित किया गया है। प्रस्तुत आलेख में संस्कृत भाषा , साहित्य एवं उसकी अन्य विधाओं में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के चिंतनशील विचार , सृजनशील लेखन एवं साहित्यिक योगदान पर एक वृहद अवलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है।

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का चिंतनशील विचार-: भारतीय भूखंड के लगभग मध्य में स्थित राज्य मध्य प्रदेश के सीहोर जिला के बुधनी तहसील के अंतर्गत नागनेण गांव पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का पैतृक निवास रहा किन्तु इनका जन्म 22 अगस्त सन 1935 ई को भोपाल के .समीप कालियाखेड़ा गांव मे जन्में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल तीन भाई और एक बहन थे उनका विवाह बाल्यकाल में चंदा देवी से तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा वहीं पर हुई किन्तु उच्च एवं उच्चतर शिक्षा लिए बनारस आएं और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या, धर्म विज्ञान संकाय में सेवारत रहे तथा धर्म साहित्य शास्त्र के साहित्य विभाग में विभागाध्यक्ष बने। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार, महानकवि, नाटककार और समीक्षक तो थे ही साथ में उनका विचार हमेशा संस्कृत साहित्य को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का रहा।वह आधुनिक संस्कृत आचार्य की परंपरा में देव वाणी संस्कृत के संपादक, प्रकांड विद्वान तथा नूतन

[1]सुष्मिता सिंह, शोध छात्रा- संस्कृत विभाग, गांधी शताब्दी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश, ईमेल आईडी- sushmitasingh05995@gmail.com

[2]डॉ. शिवाकांत पाण्डेय, शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गांधी शताब्दी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश|

संस्कृत साहित्य का सर्जन करने वाले प्रमुख विद्वान थे। जब उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय में पंडित महादेव शास्त्री का शिष्य बनने का मौका मिला तब उनके श्री चरणों में बैठकर संस्कृत साहित्य के विभिन्न विधाओं का ज्ञानार्जन कर अध्ययन अध्यापन के साथ विचार प्रवाहित करना शुरू किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने 1953 ईमें शास्त्री परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में स .र्वोच्च स्थान प्राप्त किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने वर्ष 1956 में शास्त्रीय आचार्य की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, इस उपलब्धि के लिए उन्हें चौबे विश्वेश्वर नाथ संकाय में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। संस्कृत भाषा एवं साहित्य में वह धीरे धीरे देश भर के संग्रहों से 23 हस्तलेखों को इकट्ठा कर विश्व में पहली बार रघुवंश दर्पण नामक टीका का संपादन किया जो कि उनके वैचारिक जीवन का एक नया अध्याय बन गया। इसी बीच सन 1965 में पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, मध्य प्रदेश से इन्होंने पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने के अनवरत संस्कृत साहित्य पर काम करने के कारण वर्ष 1974 ई में डॉक्टरेट ऑफ लिटरेचर की उपाधि से विभूषित किया गया।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी की साहित्य सृजनशीलता-: आदर्श व्यक्तित्व व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं एवं बाह्य गुणों का समन्वय होता है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के मन में हमेशा सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, उदारता रही। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वर्षों तक संस्कृत साहित्य विभाग सेवारत रहते हुए आनंदवर्धन अलंकार, भीमसीन सहित अलंकार सर्वश्रेष्ठ आदि का प्रकाशन किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक महान पुरोधा थे। उन्होंने अपनी लेखन शैली में ब्राह्मी लिपि, शारदा लिपि और नागरी लिपि का भरपू उपयोग किया है।उनकी कई पुस्तकें, संस्कृत साहित्य का शब्दकोश और साथसाथ सैकड़ो - शोध पत्रों का प्रकाशन कराया और उनके रिसर्च स्कॉलर देश दुनिया में अपना शैक्षिक योगदान कर रहे हैं। पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी ने देश विदेश में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का परचम लहराया है।

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने नेपाल, हॉलैंड आदि देशों में समयसमय पर विश्व संस्कृत सम्मेलन में शाम-िल होकर भारत का मान बढ़ाया। आप भारत के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में कई अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में शामिल हुए। इन सभी के बीच पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, व्यास पुरस्कार, भोज पुरस्कार वाल्मिकी पुरस्कार, विश्व भारती पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है। इसके साथसाथ- 15 अगस्त 1978 को तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यह सब पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके संस्कृत साहित्य में योगदान का प्रतिफल है।

पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी की कृतियां-: पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी बाल्यकाल से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अल्पायु में ही मातापिता का साया सर से उठ जा-ने के कारण व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक जिम्मेदारियां उठा लिया इनकी अध्ययन काल से ही लेखन के प्रति रुचि अध्यापन कल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। इनके द्वारा कई काव्य, महाकाव्य, नाटक, कथा, गीतकाव्य ग्रंथ, काव्यशास्त्री ग्रंथ, शब्दकोश आदि लिखे। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी की कुल 30 प्रकाशित मौलिक रचनाओं में तीन महाकाव्य, तेरह काव्य, दो नाटक , तीन

कथाएं, कई मोनोग्राफ तथा कालिदासशब्दनविक्रम प्रमुख है। इनके लेखन में भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मौलिक और उस समय की देश काल एवं परिस्थितियों का चित्रण दिखाई पड़ता है। संस्कृत के कई विद्वानों महाकवि कालिदास की कृतियों का विश्लेषण एवं वर्णन प्रस्तुत किया है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य उत्तरसीतारामचरितम्, स्वतंत्रसंभोगकुमारम्, विजयनम् आदि प्रमुख है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी नेआदि है....., इनकी प्रमुख शास्त्रीय कृतियां काव्यालंकार है इन्होंने एक कोष कालिदास शब्द अनुक्रम ..... को की शब्द अनुक्रमणिका तैयार की प्रसाद द्विवेदी कई संपादित ग्रंथ रघुवंशदर्पण, कालिदासग्रंथावली, रितुसंघार, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, काव्यप्रकाश सुधाकरम्, भारतीय काव्य मीमांसा, श्रृंगार प्रकाश, सत्यनारायण व्रतकथा, शिवमहिमा स्त्रोतम्, मेघदूतम, रघुवंशम आदि पर पांडुलिपियों भी तैयार की। यह सब उनके संस्कृत साहित्य के विकास का अप्रतिम उदाहरण है।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी स्मृति शेष-: संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान, लेखक एवं साहित्यकार का शैक्षिक, व्यावसायिक जीवन धर्म, आध्यात्म,साहित्य और संस्कृति की नगरी काशी में अधिकांश समय बिताया। देशविदेश में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का संस्कृत-, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में सैकड़ो शोध प्रबन्ध, आलेख तथा जनरल प्रकाशित हुए हैं।कई पुस्तकों एवं शब्दकोष के लेखक का जीवन के अंतिम क्षण मकाशी नगरी में रहते हुए 22 जनवरी 2021 को देहावसान हो गया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल 86 वर्ष की उम्र में विश्व विख्यात विद्वान एवं कवि का देहावसान संस्कृत साहित्य के जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इसकी सूचना पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी संस्कृत की महान विभूति महोउपाध्याय के निधन की सूचना अत्यंत दुखद है उन्होंने संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कई प्रतिमान गढ़े हैं उनका जाना समाज के लिए एक अपूरणीय छति है। दुःख की इस घड़ी में मैं उनके परिजन, प्रशंसकों और शुभचिंतकों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूंओम ! !शांति" पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी जैसे महान संस्कृत की विद्वान को खोना भारतीय संस्कृत साहित्य की अपूरणीय छति है।

उपसंहार-:पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी मध्य प्रदेश में जन्मे बड़े हुए प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा प्राप्त किया किंतु उच्च एवं उच्चतर शिक्षा तथा व्यवसायिक जीवन का अधिकांश समय काशी हिंदू विश्वविद्यालय में व्यतीत किया। इन्होंने संस्कृत साहित्य और उसकी भाषा को पोषित कर देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप नया स्वरूप प्रदान किया। अनेक साहित्यिक सर्जना के कारण इनकी ख्याति देश विदेश के कोनेकोने में रही है अन्य -साथ पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी का सबसे बड़ा योगदान महाकवि कालिदास की संपूर्ण कृतियों -योगदानों के साथ का संस्कृत साहित्य में व्यापक समावेश और उपयोगिता को उजागर करना रहा है। देश के ऐसे प्रकांड संस्कृत विद्वान और मनीषी को खोना जिसकी क्षतिपूर्ति आने वाले कई सौ सालो में होना मुश्किल है। भगवान उनके आने वाली पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और साहित्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का गुणगान, प्रचार प्रसार और बताए गए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। साथ ही साथ संस्कृत साहित्य के जुड़े हुए तमाम विद्वानों, कवियों, साहित्यकारों कथाकारों, काव्यकारो और लेखकों को भी प्रेरणा मिलती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखंभा भारती एकडेमी, वाराणसी, वर्ष 2019
2. शुक्ल एवं द्विवेदी, संस्कृत साहित्य के वट वृक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र,नई दिल्ली 2018
3. त्रिपाठी एवं नरेन्द्र दत्त, संस्कृत साहित्य का भविष्य, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली वर्ष 2018
4. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, राम परिसंख्या, कालीदास संस्थान, वाराणसी वर्ष 2008
5. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, शरशय्या खंडकाव्य, कालीदास संस्थान, वाराणसी, वर्ष 2002
6. डॉउमाशंकर शर्मा . 'ऋषि', शब्दार्थरत्नम्, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी वर्ष 1999
7. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', हिन्दू धर्म व्याख्यान, क्योटो तथा हिरोशिमा, जापान, वर्ष 1997